ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 15   11 से 17 अप्रैल, 2013   दयानन्दाब्द 190   सृष्टि सम्वत् 1960853114   सम्वत् 2070   चै. शु.-01

शुल्कः- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वेद वाणी संस्कृत को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास किये जायें

- स्वामी आर्यवेश

त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न

दिल्ली संस्कृत अकादमी (दिल्ली सरकार) व वैदिक मिशन मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज सान्ताक्रुज (मुम्बई) में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम 22, 23, 24 मार्च, 2013 शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम वैदिक परम्परा व संस्कृत भाषा की सर्वांगीण उन्नति को उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री मुकुन्दकाम शर्मा जी थे। इन्होंने संस्कृतभाषा के माध्यम से उपस्थिति प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। सारस्वत अतिथि के रूप में कवि कुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. उमावैद्य जी उपस्थित थी। उन्होंने अपने उद्गारों में ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की चर्चा के साथ–साथ गायत्री मन्त्र की विशेष व्याख्या प्रस्तुत की। उनके इस भाषण से सभी उन्होंने अकादमी की गतिविधियों की भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित अत्यन्त संस्कृत प्रेमी हैं। वे संस्कृत की उन्नति में अत्यन्त सहयोग करती हैं। उन्होंने दिल्ली सरकार की भाषामन्त्री प्रो. किरण वालिया जी की भी संस्कृत के कार्यों के प्रति भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए बताया कि इन दोनों के सत्प्रयासों से दिल्ली में एक संस्कृत का अस्यवामीय सूक्त, मण्डूकसूक्त, नासदीयसूक्त, पुरुषसूक्त, मन आवर्तन सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, संज्ञान सूक्त, संगठन सूक्त व संवाद सूक्तों को रखा गया था। सभी विद्वानों ने उपर्युक्त विषयों पर गम्भीर विवेचनापरक शोधलेखों का वाचन किया। इस सत्र में लगभग 15 विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

सायंकालीन चायपान के उपरान्त 7. 30 से 9.00 बजे तक भजन एवं उपदेश

दृष्टिपथ कर आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का मूल विषय ऋक्सूक्तविमर्शनम् रखा गया।

सृष्टि के आदि में परमात्मा ने सर्वविधा ज्ञानोपार्जन के लिए वेदों का आविर्भाव इस धरा पर किया। समस्त ऋषियों व महर्षियों ने अपने अध्यात्म पथ का विस्तार इन्हीं वेदों के आधार पर किया। समस्त ज्ञान–विज्ञान के संवाहक वेद ही है। ऋषियों ने जो ज्ञान–विज्ञान इन वेदों के दोहन से प्राप्त किया था, आधुनिक युग उस अक्षुण्ण ज्ञान राशि से विमुख होता जा रहा है। जिसके कारण हम भौतिकवाद के जाल में सर्वतः बद्ध हो चुके हैं। यह वेदों का ज्ञान प्रत्येक मानव को प्राप्त हो, इसी निमित्त यह सम्मेलन आयोजित किया गया था। संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना यह ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त दुष्कर है। संस्कृत भाषा में जो ज्ञान–विज्ञान की निधि निहित है, उसका दर्शन अन्यत्र सर्वथा अप्राप्य है। इसीलिए संस्कृत अकदामी का इस सम्मेलन में सहयोग करना सम्मेलन की विशेषता को द्विगुणित करता है।

कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन 22 मार्च, 2013 को प्रातः 10 बजे किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली ने की। इस कार्यक्रम में विशिष्टातिथि के रूप में लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ के कुलाधिपति व

अत्यन्त प्रभावित थे। कार्यक्रम में श्री मिठाई लाल जी की गरिमामयी उपस्थिति भी रही। श्री मिठाई लाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान हैं। उन्होंने वेद और संस्कृत भाषा की महत्ता पर भाषण दिया। इस उद्घाटन सत्र में हरियाणा संस्कृत अकदामी के निदेशक डॉ. सुधीर कुमार, दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा प्रो. शशिप्रभा कुमार, सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, उपसचिव डॉ. जीतराम भट्ट, वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव व मंत्री श्री संदीप आर्य आदि गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित था। डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने संस्कृत अकादमी के सचिव रूप में अपना प्रस्तावित उद्बोधन प्रस्तुत किया। वैदिक ज्ञान विज्ञान की चर्चा के साथ–साथ विशिष्ट सार्वजनिक पुस्तकालय का निर्माण किया जायेगा। कार्यक्रम का संयोजन वैदिक मिशन मुम्बई के मंत्री श्री संदीप आर्य ने किया। कार्यक्रम के इस सत्र का समापन एक बजे हुआ। भोजनावकाश के उपरान्त द्वितीय सत्र प्रारम्भ किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. महावीर मीमांसक दिल्ली ने की। सारस्वतातिथि के रूप में प्रो. शशिप्रभा कुमार की गरिमामयी उपस्थिति से मंच शोभायमान था। कार्यक्रम के इस सत्र का संयोजन डॉ. दीनदयाल वेदालंकार व रवीन्द्र कुमार ने किया। इस सत्र में अनेक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं संस्कृत जगत् के प्रतिष्ठित विद्वानों के शोधपत्रों का वाचन हुआ। इस सम्मेलन में चर्चा हेतु का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सत्र में श्री कैलाश कर्मठ जी (कलकत्ता) ने अपने मधुर भजनों से सबको आनन्दित किया। भजनोपरान्त स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का सारगर्भित उपदेश हुआ। यह सत्र रात्रि 9.00 बजे समाप्त हुआ। इस प्रकार सम्मेलन का प्रथम सत्र श्लाघनीय रहा।

23 मार्च को प्रातः यज्ञ के साथ सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। यज्ञोपरान्त प्रातराश हुआ। 9.00 बजे से सत्रारम्भ किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. कमलेश चौकसी जी (अहमदाबाद) ने की। सारस्वतातिथि के रूप में प्रो. भीमसिंह वेदालंकार जी उपस्थित थे। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सत्यपाल जी पुलिस कमिश्नर मुम्बई उपस्थित थे। मंच की शोभा स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. शशिप्रभा कुमार, डॉ. धर्मेन्द्र जी आदि गणमान्य मंच की शोभा को द्विगुणित कर रहे थे। इस सत्र. में 15 विद्वानों ने अपने शोधपत्र पढ़े। जो विभिन्न प्रान्तों से आये थे। भोजनोपरान्त 2.00 बजे से 5.00 बजे तक पुनः सत्रारम्भ किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुभाष विद्यालंकार जी ने की। सारस्वतातिथि के रूप में प्रो. हृदयरंजन शर्मा जी उपस्थित थे। इस सत्र में 25 विद्वानों ने अपने शोधपत्रों का वाचन

शेष भाग पृष्ठ 7 पर

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

रामनवमी जन्मदिवस पर विशेष

शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी के रोचक संस्मरण

– श्री राधे मोहन

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी का जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर में 1881 ई. को रामनवमी के दिन हुआ था। विभिन्न शास्त्रार्थों में विजयश्री का वरण करने वाले, युक्ति और तर्कों के महान धनी, हृदय स्पर्शी वाणी के स्वामी आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रबल मण्डनकर्त्ता पं. रामचन्द्र देहलवी अपनी विद्वत्ता, तार्किकता, वाग्मिता आदि गुणों के लिए विद्वत् मण्डली में सदा अमर रहेंगे। प्रस्तुत हैं उनसे जुड़े कुछ रोचक संस्मरण।

एक बार श्रद्धेय पण्डित रामचन्द्र देहलवी को हैदराबाद आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर जाना हुआ। वहाँ उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि उर्दू भाषा बिना हिन्दी भाषा के बोली नहीं जा सकती है। निजाम सरकार के गुप्तचर विभाग ने इसकी रिपोर्ट शासन को दी। शासन के उच्च अधिकारियों ने उर्दू भाषा के अपमान स्वरूप पण्डित जी के व्याख्यान पर प्रतिबन्ध लगा दिया इसकी सूचना आर्य समाज के मंत्री को प्रेषित कर दिया। मंत्री जी घबड़ा गये और पूछा प्रतिबन्ध का कारण क्या है? मंत्री जी ने बताया कि प्रतिबन्ध का कारण उर्दू भाषा का अपमान बताया गया है। पण्डित जी ने कहा कि मुझे उच्चाधिकारियों के पास ले चलो। पण्डित जी के आदेश से मंत्री जी सीधे गृहमंत्री के पास ले गये।

एक बार मौलवी साहब ने पण्डित जी से कहा कि आपकी भाषा हिन्दी अथवा संस्कृत उसका जन्म गन्दगी से अर्थात् जिस ओर से आप आबदस्त लेते हैं उस ओर से होता है। जबकि हमारी भाषाओं की पैदाइश दाहिनी ओर होती है। पण्डित जी ने उत्तर दिया "हाँ मौलवी साहब! आप ठीक कहते हैं कि हमारी भाषाओं का जन्म गन्दगी से होता है, लेकिन वे सफाई की ओर बढ़ती जाती हैं और यदि उसे गन्दगी की ओर फिर आना पड़ा तो भी वे सफाई की ओर

पं. रामचन्द्र देहलवी

पण्डित जी को उनकी प्रार्थना को स्वीकार करना पड़ा। यह सर्व विदित है कि पण्डित जी स्वभाव से अत्यन्त सफाई पसन्द थे। पण्डित जी जहाँ भी और जिस कमरे में अतिथि के रूप में ठहरते थे, उस कमरे को अच्छी प्रकार से साफ रखते थे। पण्डित जी अपने वस्त्रों को भी स्नान के समय नित्य प्रति धो लेते थे। यौवनावस्था में ही उनकी पत्नी का देहान्त हो जाने पर अपना पुनर्विवाह नहीं किया और शेष जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सिद्धान्तों से कभी भी समझौता नहीं किया। एक बार 2 अक्टूबर

वाह मौलाना जी आप भी वुत परस्ती के शरण में आ ही गये। दरोगा जी भी पण्डित जी की भांति विनोदी स्वभाव के थे। उन्होंने कहा, "नहीं, नहीं पण्डित जी, मैं तो यहाँ राधा जी की नथुनी चोरी हो गई है, तहकीकात में आया हूँ। पण्डित जी ने पूछा, "कुछ पता चला"। दरोगा जी ने कहा, "कुछ नहीं पता चला।" "उनसे बार–बार पूछते हैं, किन्तु वे कुछ बोलते ही नहीं।" पण्डित जी ने कहा, "आप कानून की धाराओं से अच्छी तरह से वाकिफ हैं।" जो व्यक्ति अपराधी को देखते हुए उस पर चुप्पी साधे रहे तो उसे आप अरेस्ट क्यों नहीं करते? दरोगा जी ने हंसते हुए कहा, कि पण्डित जी इनको गिरफ्तार कर ले जायें तो वहाँ भी ताले में बन्द करना पड़ेगा और यहाँ भी ताले में बन्द हैं। इस उत्तर प्रतिउत्तर

अभिवादन के पश्चात् पण्डित जी ने गृहमंत्री से पूछा कि हमारे व्याख्यान पर प्रतिबन्ध क्यों लगाया गया? उन्होंने उत्तर दिया कल आपने अपने व्याख्यान में उर्दू भाषा की बड़ी मजम्मत (अपमान) किया। यह जानते हुए भी कि यहाँ की राजभाषा उर्दू है। पण्डित जी ने उत्तर दिया कि मैंने उर्दू भाषा की तौहीन नहीं की है, बल्कि यथार्थ बातें ही कही हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा कि यथार्थ बातें क्या हैं? पण्डित जी ने कहा एक स्लेट मंगवाइए, जिससे सारी बातें स्पष्ट हो जाएं। स्लेट तुरन्त आ गया। पण्डित जी ने उनसे कहा कि आप स्लेट पर लिखिए अलिफ और बे तथा आगे लिखिए हे और मीम। पण्डित जी ने उनसे कहा कि आप इसे पढ़ें। उन्होंने पढ़ा 'अब हम' पढ़ा पण्डित जी ने तत्काल कहा कि आपने जो लिखा उसे पढ़िए। आपने अलिफ लिखा तो आप अलिफ पढ़िए और बे को बे, हें को हे और मीम को मीम पढ़िए। अब यह तो हिन्दी का उच्चारण है। पण्डित जी ने कहा आपकी लिपि तो उर्दू है, लेकिन उच्चारण तो हिन्दी का है। उर्दू भाषा में जैसा लिखा है वैसा तो हम बोल भी नहीं सकते हैं। पण्डित जी ने कहा कि यही तो मैंने कहा था। वे बड़े जोरों से ठठाकर हंसे और कहा जाइए आप का व्याख्यान होगा। प्रतिबन्ध हट गया और पण्डित जी का व्याख्यान बड़े जोर शोर से हुआ। बढ़ती रहती है और उसका अन्त सफाई में ही होता है। आपकी भाषाओं का यह हाल है कि उसकी पैदाइश सफाई में तो होती है, लेकिन उसका रुझान गन्दगी की ओर होता है। और यदि सफाई की ओर आ भी गई तब भी बहुत तेजी के साथ गन्दगी की ओर ही भागती है और उसका अन्त गन्दगी में ही होता। मौलवी साहब बहुत लज्जित हुए और कुछ कह न पाए।''

श्रद्धेय पण्डित जी का स्वभाव अपने शिष्यों से भी स्नेहिल हुआ करता था। एक दिन वे शास्त्रार्थ महारथी ओम प्रकाश शास्त्री (खतौली) के निवास स्थान पर अचानक पहुँच गये। श्रद्धेय शास्त्री जी ने आदर के साथ पण्डित जी का अभिवादन किया किन्तु ये कहा कि गुरु जी मैं आपको अपने यहाँ ठहरा नहीं सकता हूँ। आपका प्रबन्ध मैं आर्य समाज मन्दिर में कर देता हूँ। पण्डित जी ने कहा, ''ऐसा क्यों? उन्होंने कहा कि मुझे डिसेन्ट्री है। बार–बार बहुत पतले दस्त होते हैं। इसलिए शौचालय बहुत गन्दा हो गया है। इसलिए मुझे मना करना पड़ रहा है। पण्डित जी ने अपना अचकन उतारा और पूछा कि कहाँ है तुम्हारा शौचालय? उन्होंने शौचालय की ओर इंगित किया। पण्डित जी ने तत्काल पानी से भरी बाल्टी उठा लिया और शौचालय की ओर जब जाना चाहा तो ओम प्रकाश जी ने पण्डित जी के पैर पकड़ लिए और कहा ''गुरु जी मैं ऐसा हरगिज नहीं करने दूँगा।'' अन्ततोगत्वा गाँधी जी के जन्मदिन पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, अन्य राजनीतिक नेता तथा गाँधी जी के भक्त गाँधी जी की समाधि स्थल पर परम्परानुसार पुष्पांजलि अर्पित करने पहुँचे। पण्डित जी भी श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले राजनेताओं की पंक्ति में खड़े हो गये। सरकारी माली ने पण्डित जी के हाथों में फूल देना चाहा तो पण्डित जी ने कहा "I am not a fool." माली भौचक्का रह गया और उसने कहा, क्या ये सब लोग बेवकूफ हैं?'' पंडित जी ने तत्काल उत्तर दिया ''मैंने अपने सम्बन्ध में कह दिया, बाकी वे लोग स्वयं जाने'' पण्डित जी समाधि तक तो आये, लेकिन उन्होंने समाधि पर फूल नहीं चढ़ाया।''

पण्डित जी स्वभाव से विनोदप्रिय थे। एक बार उनके चिर परिचित मुस्लिम दरोगा जी अपने दो सिपाहियों के साथ कृष्ण के मन्दिर के सामने चबूतरे पर बैठे थे। पण्डित जी ने हंसते हुए कहा कि से पण्डित जी और मौलवी साहब दोनों ठठाकर हंस पड़े और सुनने वाले भी प्रफुल्लित हो गये।

आर्य समाज चौक के वार्षिकोत्सव पर यह परम्परा रही है कि समागत विद्वानों का आतिथ्य करने के लिए जो सज्जन भोजन कराना चाहते हों, वे ले जा सकते थे। मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे भी श्रद्धेय पण्डित रामचन्द्र देहलवी, पण्डित शान्ति प्रकाश जी, श्री ओम प्रकाश शास्त्री, महात्मा आर्यभिक्षु, श्रीमती सावित्री शर्मा, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री ओम प्रकाश वर्मा, ठाकुर महिपाल सिंह, श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री आदि विद्वानों को अपने निवास पर बुलाकर उनके पाद प्रक्षालन का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ।

– गंगा प्रसाद उपाध्याय
पुरस्कार समिति, इलाहाबाद

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में प्रवेश प्रारम्भ

दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था व महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सम्बद्ध गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। आर्ष पाठ विधि के साथ–साथ प्राथमिक कक्षा से ही आधुनिक विषय अंग्रेजी, साइन्स व कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाती है।

प्रवेश के लिए सम्पर्क करें
आचार्य सुधांशु (प्राचार्य), मो.:–9350538952

रामनवमीं पर विशेष

भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

— डॉ. रामनाथ त्रिपाठी

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता परिवार प्रेम से हम वंचित रह जायेंगे।

कोई पूछे कि भारतीय संस्कृति की परिभाषा क्या है, तो बेहिचक उत्तर दिया जा सकता है कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीय संस्कृति है। एक पूर्ण पुरुष में जितने भी अच्छे गुण हो सकते हैं, राम उन सबके पुंज हैं। उन्होंने अनेकविध कष्ट झेलते हुए भी घर—परिवार, समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व के समक्ष त्याग, स्नेह शील और नैतिकता के जो आदर्श

का ध्यान रखा। यहाँ तक कि इतना बड़ा दण्ड देने वाली सौतेली माता कैकेयी की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। पंचवटी में जाड़े की ऋतु में कोहरे से ढंकी गोदावरी में स्नान के लिए जाते हुए लक्ष्मण ने कहा था — ऐसी शीत ऋतु में महात्मा भरत तड़के सवेरे उठकर सरयू में नहाते और ठंडी धरती पर सोते होंगे। ऐसा ध र्मात्मा पुत्र पाकर भी कैकेयी इतनी क्रूर कैसे हो गयीं? राम बोले लक्ष्मण, रहने दो, माता कैकेयी की निन्दा न करो। इस समय तुम केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।

मर्यादा की स्थापना

विमाता कैकेयी ने राम के प्रति क्रूर होकर घोर अनिष्ट किया था। लेकिन उन्होंने भी राम के चरित्र के विषय में जो शब्द बोले, विचारणीय या वन में, तुम्हीं हमारे शासक हो। इन राक्षसों से हमारी रक्षा करो। राम ने उन्हें रक्षा का आश्वासन दिया था। मानस में भी राम ने कहा है — **निसिचरहीन करउँ महि, भुज उठाई प्रन कीन्ह।**

वे धनुष की प्रत्यंचा टंकारते हुए और भारी पगों से धरती को कंपाते हुए दक्षिण की ओर बढ़े थे। मानों वे राक्षसों को चुनौती दे रहे थे। उनके इस कृत्य से ही स्पष्ट है कि सीताहण न भी हुआ होता तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी राक्षसों से टक्कर ली होती। कुछ लोगों को भ्रम है कि राम ने एकाध बार मर्यादा का उल्लंघन किया है। जैसे, उन्होंने बाली को छिपकर मारा। बाल्मीकि रामायण को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि राम ने बाली को छिपकर नहीं मारा था। बाली ने उनकी ओर वृक्ष और बड़ी—बड़ी शिलाएं फेंकी थीं। राम ने अपने वज्र जैसे वाणों से विदीर्णकर उसे मार गिराया था — **क्षिप्तान् वृक्षान् समविध्य विपुलाश्च** अनुसरण करती है। यह सुनकर राम को गहरा आघात लगा था। जिस जनता के लिए वे सदा समर्पित रहे वही उनका विरोध कर रही थी। राम सीता को प्राणों से भी अधिक चाहते थे। उन्होंने पतिव्रता सीता के चरित्र पर कभी भी संदेह नहीं किया। उन्होंने कहा था — मेरी अन्तरात्मा कहती है कि यशस्विनी सीता शुद्ध है — **अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम्।** ऐसा था तो राम ने सीता को निर्वासित क्यों किया? उन्होंने ऐसा किया प्रजाजन के मत का सम्मान करने के लिए। उत्तर रामचरित नाटक में राम के चरित्र को सही रूप में समझा गया है।

राम के अभिषेक के समय वसिष्ठ ने कहा था — देखो राम, साधारण जनता ने भी ऐसा अनुभव किया है कि यह अभिषेक मानो उनका ही हो रहा है। तुम्हें भेदभाव से ऊपर उठकर सभी का ध्यान रखना होगा। प्रजारंजन तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है। श्रेष्ठ राज्य की नींव शासकों के व्यक्तिगत त्याग, मर्यादा और बलिदान पर ही रखी जाती है। राम ने गुरु वसिष्ठ को आश्वस्त करते हुए कहा था — गुरुदेव, प्रजा के अनुरंजन के लिए मुझे अपने सभी सुख, माया—ममता, यहाँ तक कि सर्वाधिक प्रिय जानकी को भी त्यागना पड़े तो मुझे रंचमात्र व्यथा न होगी —

स्नेहं दयांच सौख्यं च यदि वा

प्रस्तुत किये, उससे भारत का जन–जन प्रभावित है। यहाँ की चप्पा–चप्पा भूमि पर रामत्व की छाप है। रामायण घरेलू जीवन का महाकाव्य है। ऐसा ग्रंथ किसी अन्य देश या संस्कृति में उपलब्ध नहीं।

पिता की आज्ञा शिरोधार्य

कैकेयी ने भले ही छलपूर्वक राजा दशरथ से दो वर माँग लिये हों, पर राजा दशरथ ने कभी अपने मुँह से राम को वन जाने के लिए नहीं कहा था। वे मन ही मन चाहते थे कि राम वन न जाएँ। माता कौशल्या उन पर दबाव डाल रही थीं कि माँ का महत्त्व पिता से बढ़कर है। वे माँ के आदेश मानकर वन न जाएँ। गुरु वसिष्ठ, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य, पूरा रनिवास और समस्त प्रजाजन राम के पक्ष में थे। लक्ष्मण फुंफकारते हुए कह रहे थे – रघुनन्दन, इसके पहले कि कोई वनवास की बात जाने, आप राज्य पर अधिकार कर लीजिए। मैं आपकी बगल में धनुष लेकर खड़ा हो जाऊँगा। आप काल के समान युद्ध कीजिए। मैं भरत का पक्ष लेने वालों को वाणों से बींध दूँगा। पिता जी कैकेयी का साथ देंगे तो उन्हें भी दंडित करूँगा।

कैकेयी और मंथरा को छोड़कर कोई भी राम का विरोध नहीं कर रहा था। यदि वे वनवास को स्वीकार न करते तो कोई उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने इतना बड़ा त्याग किया, किसलिए? इसलिए कि श्रद्धेय पिता द्वारा दिए वचन झूठे न हो जाएँ। इस प्रकार उन्होंने राज्य का सुख त्याग कर और 14 वर्षों के कठोर व्रत को स्वीकार कर पितृ भक्ति का अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। पिता ने भी पुत्र वियोग में प्राण त्याग कर चरम वात्सल्य का परिचय दिया। राम ने परिवार के सभी सदस्यों हैं। जब भरत ननिहाल से लौटकर माता कैकेयी से मिले और उन्हें ज्ञात हुआ कि राम को वनवास दिया गया है तो उन्होंने चकित होकर पूछा क्या राम ने किसी ब्राह्मण का धन हरण किया है? किसी निरपराध व्यक्ति की हत्या की है अथवा क्या उनका मन पराई नारी की ओर चला गया है? उन्हें किसलिए वनवास का दण्ड दिया गया है? कैकेयी ने बताया बेटा, राम ने न तो किसी का धन छीना है और न किसी निरपराध की हत्या की है। वह तो पराई नारी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, **न रामः परदारान् स चक्षुभ्यमिपि पश्यति।** मानस में भी कहा गया है – **जेहि सपनेहु परनारि न हेरी।** उड़िया रामायण के अनुसार राम पराई नारी को सहोदर या माता कौसल्या के समान मानते थे। सीता ने भी स्वीकार किया था कि उनमें ही राम का गहन अनुराग है। परिस्थितियों से विवश होकर राम ने सीता को निर्वासित किया था किन्तु उन्होंने अन्य किसी नारी से पाणिग्रहण नहीं किया था। उन्होंने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा स्थापित की थी। राम के चरित्र से प्रभावित होकर अन्य रामायणी पात्र भी उनके जैसा आचरण करते थे। लक्ष्मण ने भाभी सीता की चरणों को छोड़कर कभी आँख उठाकर उनके सौंदर्य को नहीं देखा था।

आरम्भ से ही राम जनमत को आदर देने वाले लोकप्रिय शासक रहे थे। जब वे अयोध्या को छोड़कर वन की ओर चले थे तो उनके पीछे ब्राह्मण, ऋषि आदि ही नहीं रजक (धोबी) तन्तुवाय (दर्जी) और अनेक प्रकार के शिल्पी (कारीगर) आदि जन भी अपने–अपने घर छोड़कर चल पड़े थे। राम उन्हें कौशल पूर्वक ही लौटा सके थे। चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते समय अनेक ऋषियों की हड्डियों के ढेर लगे हैं। इन्हें राक्षसों ने मारा है। राम, तुम नगर में रहो **तथा शिला। बाली वज्र समैर्वाणेर्वज्रेणेव निपाततः।।**

वस्तुतः सुग्रीव और सभी मंत्रियों को विश्वास हो गया था कि बाली मायावी असुर के साथ युद्ध करते हुए मारा गया है। तभी मंत्रियों ने सुग्रीव का अभिषेक कर वानरों की प्रथा के अनुसारा तारा को उसकी पत्नी बना दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं था। लेकिन बाली जब असुर को पछाड़कर आया तो उसने बिना सोचे–समझे निर्दोष सुग्रीव को पीट–पीटकर राज्य से बाहर खदेड़ दिया और अनुज वधु रूमा को बलात् अपनी पत्नी बनाया, सुग्रीव के जीते जी उसने यह अपराध किया था। उसने इससे भी बड़ा एक और अपराध किया था –आतंकवादी राक्षस निरन्तर आर्यावर्त की ओर आते रहते थे। वे उत्पात मचाकर ऋषि संस्कृति को नष्ट कर रहे थे। रावण के साथ बाली की सांठ–गांठ थी। बाली इन आतंकवादी राक्षसों को रोकता नहीं था। राक्षसों की घुसपैठ रोकने और दुराचारी रावण से टक्कर लेने के लिए बाली का विनाश अपरिहार्य था। राम ने उससे युद्ध नहीं किया था, उसे दंडित किया था।

सीता निर्वसन के प्रसंग में किसी रामायण में बताया गया कि राम ने एक धोबी के कहने पर सीता को निर्वासित किया। किसी रामायण में बताया गया कि रावण का चित्र बनाने के कारण राम ने सीता के चरित्र पर संदेह किया। जबकि बाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने कभी भी सीता के चरित्र पर संदेह नहीं किया। गुप्तचर ने उन्हें बताया था कि नगर, वन–उपवन, हाट–घाट और चौराहों पर खड़े होकर लोग चर्चा करते हैं कि राम ने पराये घर में कई मास तक रही सीता स्वीकार कर अच्छा नहीं किया। अब हमें भी अपनी स्त्रियों को सहना पड़ेगा क्योंकि जैसा राजा करता है प्रजा उसी का **जानकीमपि।**

आराधनाय लोकस्य मुंचते नास्ति मे व्यथा।।

राम ने एक ओर प्रजारंजक राजा के कर्त्तव्य का पालन किया तो दूसरी ओर उन्होंने पति का दायित्व भी निभाया। उन्होंने सीता को पिता के मित्र बाल्मीकि के आश्रम के निकट इसीलिए रखवाया था ताकि ऋषि सीता और उनकी गर्भस्थ सन्तान को संरक्षण दे सकें। सीता को निर्वासित कर वे स्वयं ही निर्वासित हुए थे। लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जब अयोध्या लौटे थे तो उन्होंने पाया था कि राम इन चारों दिनों तक कक्ष में बन्द रहे थे। वे न सोये थे और न उन्होंने अन्न ग्रहण किया था। उनका मन लगाने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गई थी। यज्ञ धर्मपत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होता। इसलिए उन्होंने किसी अन्य नारी का पाणिग्रहण न कर अपने पार्श्व में सीता की कंचन प्रतिमा स्थापित कराई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। जहाँ यह प्रभाव नहीं रह गया है वहाँ माँ, पिता, पुत्र, भाई, बहन के सम्बन्धों की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता – 'परिवार प्रेम' से हम वंचित रह जायेंगे। तब भारत भोगवादी पश्चिम भले ही बन जाए, वह त्याग, स्नेह, शील–सम्पन्न नैतिकतावादी देश नहीं रह जायेगा। ●

ओ३म् का जाप और स्वास्थ्य विज्ञान

—आचार्य पं० विभुमित्र शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' के प्रारम्भ में लिखा है कि ''ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्य गर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।'' वेदों और शास्त्रों में भी ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है। वेद में ''ओ३म् एवं ब्रह्म'' वाक्य आया है, अर्थात् परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् सार्थक शब्द है, जो रक्षा करता है, उसे ओ३म् कहते हैं— अवतीत्योम्। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि ''ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं— ''ओमित्येतदश्रमुद्तीथ मुपासीत।''

योगदर्शन में इसी ओ३म् नाम को "प्रणव" (ओंकार) कहा गया है— "तस्य वाचकः प्रणवः''। श्रीमद् भगवद् गीता में ओ३म् नाम की महिमा वर्णित हैः—

ओंतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।

अभी हाल ही में एक शोध प्रकाशित हुआ है, जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है, जिसका अलग—अलग आवत्तियों से रक्तचाप, दिल दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी—जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किये गये परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो सांइसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है और बहुत कुछ नई जानकारी प्राप्त की है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग—अलग आवत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। ओम् का उच्चारण पेट, सीने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है, जो शरीर की मत कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, फेफड़े तक के हिस्से से बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार धमनियों की सही स्थिति की जानकारी ली गई। वह स्क्रीन पर भी दिखायी गई— जिसे मैंने स्वयं और डाक्टरों की टीम के साथ वहीं कार्य करने वाली मेरी बड़ी पुत्री प्रतिभा कुमारी ने भी साश्रुनयनों से देखा और सब कुछ देखकर डाक्टरों के विचार से निदेशक ने सिरयस्ली समझ कर कारोनरी वायपास सर्जरी के लिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल में रेफर कर दिया और कहा कि यहां जो भी इलाज संभव था किया गया। आप दिल्ली जाये। मैं अपनी शारीरिक और आर्थिक स्थिति से लाचार होकर चिकित्सार्थ दिल्ली न जा सका और अपने स्वाध्याय तथा स्वामी रामदेव जी से प्रेरणा पाकर ओ३म् जाप और प्राणायाम करने की ओर अग्रसर हुआ। आज छह साल से अपने सरस्वती भवन स्थित यज्ञशाला में बैठकर तथा कभी काल एकान्त नदी तट पर बैठ कर ओ३म् जप के साथ प्राणायाम करता आ रहा हूँ और अब बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ। इस बीच मेरा ध्यान मनुस्मति के उस श्लोक की ओर भी गया जिसमें जाप के साथ तीन महाव्याहृतियों का उल्लेख है— ''एतदक्षरमेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम्।'' मैंने व्याहृतियों के साथ ओ३म् का जप और प्राणायाम करना शुरू किया और लाभ संतोषप्रद रहा। वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओम् (अ+उ+म्) महाव्याहृतियों का उल्लेख किया है, जो वैज्ञानिक सूझ है।

इस ओ३म् शब्द को लोग ओम्, ओ३म् (प्लुत) और तान्त्रिक या यौगिक रूप में लघुरूप देकर ॐ के रूप में भी लिखते हैं। यौगिक प्रक्रिया में जाकर वस्तुतः ओ३म् शब्द एकाक्षरी हो जाता है। शायद इसीलिए गीता में इसे एकाक्षरी कहा गया है— ''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्'' इत्यादि। इस ॐ की व्याहति प्राणायाम के समय श्वासों के वहिःसरण और अन्तः सरण के समय आसानी से किया जा सकता है। त्रयक्षरी ओ३म् और तीन व्याहृतियों के जाप से नाभि से लेकर मस्तिष्क की धमनियाँ जहाँ सामान्य होने लगती हैं— रक्त प्रवाह सामान्य होने लगता है, वहीं हृदयस्थ धमनियों की रुकावट भी धीरे—धीरे ठीक होने लगती है। इंटरनल ऑटोनोमिक नर्व्स पर असर पड़ने लगता है और दोनों की गतिविधियाँ कम हो जाती हैं। एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है, व्यक्ति शान्ति महसूस करने लगता है। बीमारियों का निवारण आसान हो जाता है। हाँ, ओ३म् जाप और प्राणायाम क्रिया के साथ ही साथ युक्ताहार विहार का होना आवश्यक है और इस प्रकार का योग (ओ३म् का जप प्राणायाम तथा युक्ताहार विहार का संयोग) जीवन में

ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा।।
तस्मादोमित्यु दाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ता सततं ब्रह्मवादिनाम्।।

नाम और नामी का सम्बंध अनादि और घनिष्ठ है। इसी कारण शास्त्रों में नाम जप की बड़ी महिमा है। योग शास्त्र में "तज्जपः तदर्थ भावनम्" कहा गया है, जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप को बार–बार आवत्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है– क्योंकि चंचल मन की एकाग्रता करने में सहायक है और इससे मानसिक शुद्धि होती है। इसीलिए मनुस्मति में जप यज्ञ को

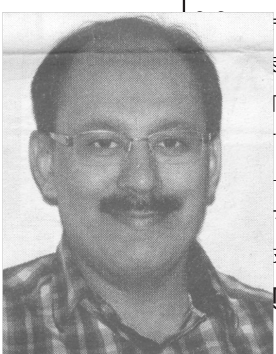

...। से दस गुणा श्रेष्ठ कहा गया है– ...ज्ञाज्जप यज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।" ...ामी दयानन्द जी ने धर्म, अर्थ, काम ... की साधना में जप को प्रथम स्थान ...– "अनेन जपोपासनादि कर्मणा ध ...म मोक्षाणा सधः सिद्धिर्भवेन्नः"। पूर्व ...जन भजन गाते हुए कहते थे कि–

...् के जप से हमारा ध्यान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह जाप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा।।"

इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक लाभ की दष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य लाभ की दष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साइंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है– जिससे आधुनिक दवाएँ हार चुकी हैं। विज्ञान पत्रिका 'साइंस" में करता है।" परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया, जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो० मॉर्गन की टीम ने धीरे–ध ीरे उन लोगों को मिलने वाली बाकी दवाइयों को बंद कर वही दवाएँ जारी रखी जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थीं। परिणाम चौंकाने वाला था। डाक्टरी निरीक्षण में उक्त रोगियों ने प्रतिदिन सुबह छह से सात बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक भी रखे गये। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आये परिणाम आश्चर्य जनक थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली। प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधि संख्यक रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार एवं दवाओं का असर भी बढ़ा।

ओम् का पहला जिक्र वेदों में मिलता है और ब्रह्माण्ड का कारण माना जाता है– "ओं खं ब्रह्म"। भगवद् गीता में इसी प्रणव (ओ३म्) को मनुष्यों के शरीराकाश में भी व्याप्त माना गया है– "प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नषु"। शरीराकाश से ही विभिन्न ध्वनियों का तथा प्रामाण, अपान, व्यान, उदान, समान– जैसे पंच प्राणों का संचरण होता है– जो स्वास्थ्य और आयु का कारण बनता है। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं हृदय रोगग्रस्त है और पटना स्थित इन्दिरा कार्डियोलोजी हॉस्पिटल में सप्ताहों भर्ती रहा। वहाँ के निदेशक डॉ० एस.एन. मिश्रा ने तत्रत्य डाक्टरों से कई प्रकार की जांच करायी, कई बार ई०सी०जी० हुई और "इको" के द्वारा हृदय की रक्त के साथ तीन महा व्याहृतियों (भूः, भुवः, स्वः) का जप भी यदि प्राणायाम के साथ होता है, तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी संध्या की पुस्तक में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में शारीरिक दुःखों का निवारक हो जाता है–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःख हा।।

श्री रामकृष्ण सतीजा को पुत्र शोक

अत्यन्त दुःखित हृदय से यह समाचार देना पड़ा रहा है कि आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली के पूर्व प्रध ाान श्री रामकृष्ण सतीजा जी के सुपुत्र श्री दिनेश सतीजा जी का 28 मार्च, 2013 को हृदयगति रूक जाने के कारण अकस्मात निधन हो गया। वे 46 वर्ष के थे।

श्री दिनेश सतीजा जी अपने पिता के ही समान आर्य समाज के प्रति पूर्ण समर्पित थे तथा आर्य समाज के प्रति गहरी आस्था रखते थे। श्री दिनेश सतीजा जी अपनी पत्नी शैली सतीजा के अतिरिक्त एक पुत्र तथा एक पुत्री सहित भरा पूरा परिवार छोड़ कर हमेशा के लिए विदा हो गये। 30 मार्च, 2013 को उनकी स्मृति में जनकपुरी में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी, जनकपुरी क्षेत्र के सांसद महाबल मिश्रा, पूर्व वित्तमंत्री डॉ. जगदीश मुखी, पूर्व महापौर श्री पृथ्वी राज साहनी, पार्षद श्रीमती रजनी ममतानी, दिल्ली सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री डी. एल. पाराशर, धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ के प्रधान सरदार सतपाल सिंह जी, विधायक श्री प्रद्युम्न राजपूत तथा श्री विनय आर्य सहित अन्य राजनेता, आर्यनेता तथा आर्य कार्यकर्ता भी उपस्थिति थे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने युवा कार्यकर्ता श्री दिनेश सतीजा के निध ान पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए उन्हें आर्य समाज का कर्मठ कार्यकर्ता बताया। स्वामी जी ने कहा कि जनकपुरी क्षेत्र में आर्य समाज ने एक अत्यन्त उत्साही तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों का प्रमुख प्रसारक तथा निष्ठावान कार्यकर्ता खो दिया है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक सभा में मंच संचालन केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान श्री शिवकुमार शास्त्री जी ने किया।

नफरत का तेजाब

देश में आए दिन महिलाओं पर हो रहे तेजाबी हमलों और तंत्र की उदासीनता पर चिंता जता रही हैं – मनीषा सिंह

> ***सामंती मानसिकता से ग्रस्त पुरुष महिलाओं को अपनी जागीर समझते हैं। इसलिए जब कभी स्त्रियां अपने लिए जरा–सी आजादी की मांग करती हैं तो उसे कुचल दिया जाता है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि समाज की बढ़ती संपन्नता और शिक्षा के बढ़ते स्तर के साथ–साथ कानूनों में तब्दीली के बावजूद इस मानसिकता में कोई सुधार नहीं आ रहा है। महिलाओं पर तेजाब से हमला करने की ज्यादा प्रवृत्ति उन कुंठित युवाओं में देखने को मिलती है जो एकतरफा प्रेम में नाकामी के बाद बदला लेने के लिए महिलाओं की जिंदगी बर्बाद करने की कोशिश करते हैं। इन मामलों में लड़की की नापसंदगी की सजा उसके चेहरे को जलाकर दी जाती है। कुछ समाजशास्त्री इसे हिंदी फिल्मों का प्रभाव बता सकते हैं, पर ऐसी फिल्में कम ही होंगी जिनमें प्रेमी इन्कार पर प्रेमिका की हत्या करता हो या उससे ऐसा हिंसक बदला लेता हो। इसके उलट हमारी फिल्में तो प्रेम में बलिदान और भारतीय मूल्यों की स्थापना पर बल देती रही हैं। असल में इसकी वजह है उपभोक्तावादी संस्कृति, जिसके प्रभाव में समाज व्यक्ति केंद्रित होता जा रहा है। इस समाज के युवाओं को इससे कोई मतलब नहीं है कि दूसरों को कुछ हासिल हो रहा है या नहीं, उन्हें सिर्फ इससे मतलब है कि उन्हें क्या मिल रहा है।***

उत्तर प्रदेश के शामली जिले में चार बहनों पर तेजाब डालने की घटना ने एक बार फिर देश को झकझोर दिया है। आश्चर्य की बात है कि दिल्ली सामूहिक दुष्कर्म के बाद से महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के दावों के बावजूद उनके साथ होने वाले हादसे बढ़ते ही जा रहे हैं। दुष्कर्म और तेजाब डाल कर झुलसाने जैसे बर्बर हमलों पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। तेजाब हमले खास तौर पर इसलिए अधिक चिंताजनक हैं, क्योंकि इस संबंध में कड़े कानूनों का अभाव है। दोषियों को अधिकतम 8–10 साल की सजा का प्रावधान तो है, लेकिन यह अपराध गैर–जमानती नहीं है। साथ ही यह अपराध हमारे युवा समाज की विकृत सोच का भी परिचायक है। एक आकलन के अनुसार भारत में होने वाले 65 फीसद गंभीर अपराधों में 16–30 आयु वर्ग के लोग लिप्त होते हैं। इससे पता चलता है कि युवा पीढ़ी की कुंठा गंभीर अपराधों में तब्दील हो रही है। कहने को तो बेरोजगारी की मार और सही मार्गदर्शन का अभाव युवाओं को हताश और कुंठित

देती रही हैं। असल में इसकी वजह है उपभोक्तावादी संस्कृति, जिसके प्रभाव में समाज व्यक्ति केंद्रित होता जा रहा है। इस समाज के युवाओं को इससे कोई मतलब नहीं है कि दूसरों को कुछ हासिल हो रहा है या नहीं, उन्हें सिर्फ इससे मतलब है कि उन्हें क्या मिल रहा है।

महिलाओं पर तेजाब फेंकने वालों से सख्ती से निपटने के लिए 2008 में केंद्र सरकार ने पहल की। उस वक्त सभी राज्य सरकारें तेजाब फेंकने की घटनाओं पर कड़ी सजा के लिए सहमत थीं। राज्य सरकारों ने इस अपराध के तहत न्यूनतम सजा सात

में नहीं हैं। उनका मत है कि ऐसा करना इंस्पेक्टर राज को बढ़ावा देना होगा। इससे घर की साफ–सफाई के लिए भी तेजाब खरीदना मुश्किल हो जाएगा।

सख्त कानून बना देने से आपराधिक प्रवृत्ति वाले लोगों में खौफ पैदा तो होगा, पर सवाल यह है कि लोग ऐसी जघन्य हरकत पर क्यों उतर आते हैं? समस्या महज कानून की कमी की नहीं है। हमारा वह तंत्र ही घोर लापरवाह और गैर जिम्मेदार है, जिस पर कानूनों को अमल में लाने की जवाबदेही है। इस बात की क्या गारंटी है कि कानून को सख्त बना देने से तेजाबी हमले रुक जाएंगे? इसलिए सिर्फ तेजाब की बिक्री को नियंत्रित करने या कठोर कानून बना देने भर से समस्या का समाधान होना मुमकिन नहीं है। इसके लिए ज्यादा जरूरी है समाज में महिलाओं के सम्मान की भावना जगे। उन्हें बराबरी का दर्जा दिया जाए। उनकी इच्छा का सम्मान हो। लोगों को यह समझाने की जरूरत है

बना रहा है, लेकिन हकीकत यह है कि युवाओं का एक वर्ग ऐसा भी है जो अभाव नहीं साधन–संपन्नता के विलास का रोगी है।

दुष्कर्म और महिलाओं के चेहरे को तेजाब डालकर झुलसाने की घटनाएं उनके पूरे जीवन को तबाह कर देती हैं। इसके बाद उनके सामान्य जीवन में लौटने की संभावना करीब–करीब खत्म हो जाती हैं। ऐसा भी नहीं है कि ये घटनाएं सिर्फ भारत में हो रही हों। पाकिस्तान, बांग्लादेश समेत पूरे एशिया में समाज का एक वर्ग महिलाओं के साथ ऐसा ही व्यवहार करता आ रहा है। इसके पीछे का सच शायद यह है कि सामंती मानसिकता से ग्रस्त पुरुष महिलाओं को अपनी जागीर समझते हैं। इसलिए जब कभी स्त्रियां अपने लिए जरा–सी आजादी की मांग करती हैं तो उसे कुचल दिया जाता है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि समाज की बढ़ती संपन्नता और शिक्षा के बढ़ते स्तर के साथ–साथ कानूनों में तब्दीली के बावजूद इस मानसिकता में कोई सुधार नहीं आ रहा है। महिलाओं पर तेजाब से हमला करने की ज्यादा प्रवृत्ति उन कुंठित युवाओं में देखने को मिलती है जो एकतरफा प्रेम में नाकामी के बाद बदला लेने के लिए महिलाओं की जिंदगी बर्बाद करने की कोशिश करते हैं। इन मामलों में लड़की की नापसंदगी की सजा उसके चेहरे को जलाकर दी जाती है। कुछ समाजशास्त्री इसे हिंदी फिल्मों का प्रभाव बता सकते हैं, पर ऐसी फिल्में कम ही होंगी जिनमें प्रेमी इन्कार पर प्रेमिका की हत्या करता हो या उससे ऐसा हिंसक बदला लेता हो। इसके उलट हमारी फिल्में तो प्रेम में बलिदान और भारतीय मूल्यों की स्थापना पर बल

विडंबना

◆ विडंबना है कि शिक्षा, संपन्नता में आगे बढ़ते समाज और कानूनों में तब्दीली के बावजूद तेजाब फेंकने जैसी घटनाओं पर अंकुश नहीं लग रहा है

साल करने को कहा था पर महिला आयोग व अन्य संगठनों की मांग थी कि न्यूनतम दस साल और अधिकतम उम्र कैद हो। राज्य सरकारें पीड़ित को मुआवजा सुनिश्चित करने के पक्ष में थीं। इसके बाद 2010 में गृह मंत्रलय की एक उच्चस्तरीय समिति ने तेजाबी हमले करने वालों को दस साल कैद और दस लाख रुपये जुर्माने की सिफारिश की थी। तेजाबी हमलों को लेकर सख्त कानून लाने की मांग अरसे से की जाती रही है और कानून बनाने की अपनी निश्चित प्रक्रिया होती है, मगर इस समस्या से निपटने के कई और तरीके हैं, जिन पर अमल नहीं हुआ है। मसलन तेजाब की खुली बिक्री पर आज तक लगाम नहीं लग पाई। राज्य सरकारें इसके पक्ष कि हमारा समाज स्त्रियों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने वाला कोई भी कृत्य बर्दाश्त नहीं कर सकता। कानून बनाने के साथ यह जरूरी है कि तमाम एजेंसियों को मुस्तैद किया जाए। महिला आयोग सहित कई सामाजिक संगठन मांग करते रहे हैं कि तेजाब फेंकने के मामले में कठोर सजा देने के प्रावधान के साथ पीड़ित की आर्थिक मदद की व्यवस्था भी होनी चाहिए। गृह मंत्रलय की उच्च स्तरीय समिति ने अभियुक्त से वसूली जुर्माने की राशि पीड़ित को देने की बात कही थी, लेकिन यह भी पर्याप्त नहीं है। आर्थिक मदद के लिए विशेष नीति बनाने के अलावा पीड़ित महिला के सामाजिक पुनर्वास की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

response@jagran.com

दैनिक जागरण से साभार

आर्य समाज हापुड़ के 123वें स्थापना दिवस पर वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हापुड़ के 123वें स्थापना दिवस पर वार्षिकोत्सव 18 अप्रैल से 21 अप्रैल, 2013 को भव्य रूप से मनाया जायेगा। 18 अप्रैल को प्रातः "शोभायात्रा" सायं को कवि सम्मेलन होगा। अतिथियों के ठहरने एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था रहेगी। आर्य जगत के उच्चोकोटि के विद्वान भजनोपदेशक पधारेंगे। आप सादर आमन्त्रित हैं।

– आनन्द प्रकाश आर्य

राष्ट्ररक्षा यज्ञ का भव्य आयोजन

"तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे।"

हापुड़, आर्य समाज मन्दिर में अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के 82वें बलिदान दिवस पर 'राष्ट्ररक्षा यज्ञ' का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. राजेन्द्र शास्त्री व मुख्य यजमान रेखा गोयल, मदनलाल बूरा वाले थे।

शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रधान आनन्द आर्य ने बताया कि आर्य समाज की गोद में खेले, महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की घुट्टी पिये अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव 23 मार्च, 1931 को सायं 7.33 मिनट पर हंसते, गाते, झूमते इकंलाव जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दावाद के नारे लगाते हुए भारत माता की आजादी के लिए बलिदान हो गये।

इनके बलिदान से प्रेरणा पाकर अनेकों युवाओं ने क्रांति के मार्ग को चुना और बलिदान दिया। आज की युवा पीढ़ी को इस त्रिमूर्ति का जीवन हमेशा प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। हम सरकार से मांग करते हैं कि विद्यालयों में क्रान्तिकारी, देश भक्तों के जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में प्रमुखता के साथ रखकर इन पर शोध कार्य भी कराना चाहिए" जिससे दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी को देश भक्ति की राह प्राप्त होगी।

आईये! हम सब मिलकर संकल्प लें कि "हम अपने राष्ट्र से आतंकवाद, भ्रष्टाचार, कदाचार को समाप्त करने तथा राष्ट्र को सबल-समृद्ध, शान्तिमय बनाने के लिए सतत् प्रयास करेंगे। यही शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मंत्री डॉ. विकास अग्रवाल ने कहा कि व्यक्ति अपने लिए नहीं वरन समाज के लिए, राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं वहीं इतिहास में अमर होते हैं। सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव ऐसे ही इतिहास पुरुष थे जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। क्रान्तिकारियों पर विशेष रूप से आर्य समाज का प्रभाव था। पंजाब प्रान्त की आर्य समाजों के प्रधान लाला लाजपत राय के बलिदान से प्रेरणा लेकर इन तीनों क्रान्तिकारियों ने साण्डर्स की हत्या कर बदला लिया था। लाहौर काण्ड में इन्हें बन्दी बनाकर मुकदमा चलाया गया और फाँसी की सज़ा सुना दी गई। ये क्रान्तिकारी किसी राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिकों में श्रेष्ठ और श्रेष्ठ क्रान्तिकारियों में श्रेष्ठ क्रांतिकारी कहलाने के योग्य हैं। हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। बनावटी नैतिकता जिससे हमारा सारा राष्ट्रीय चरित्र दूषित और बनावटी हो गया है, क्रान्तिकारियों के पथ पर चलकर समरसता पैदा कर सकते हैं। अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

शोक संदेश

श्रद्धेय प्रोफेसर कैलाशनाथ सिंह पूर्व शिक्षामंत्री उत्तर प्रदेश शासन एवं पूर्व सांसद तथा मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का दिनांक 9 मार्च, 2013 दिन शनिवार को हृदय गति रूक जाने से निधन हो जाने पर आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर, मध्य प्रदेश में दिनांक 31 मार्च, 2013 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त आर्यजनों ने दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, एवं शोक संतप्त परिवार को इस गहन दुःख को सहने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

सम्माननीय प्रोफेसर कैलाशनाथ सिंह जी वैदिक सम्पदा के धनी थे उनके द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किये गये वे उत्तर प्रदेश शासन के शिक्षामंत्री रहे इसके पश्चात् सांसद भी रहे वर्तमान में आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा दिल्ली के मंत्री पद पर कार्य कर रहे थे।

आर्य समाज की प्रगति में उन्होंने जो विशिष्ट योगदान किया है हम सभी उनके आभारी हैं। पुनः दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

समस्त पदाधिकारी एवं सभासद आर्य समाज महाराजपुर, जिला-छतरपुर, मध्य प्रदेश

आर्य महोत्सव

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव पर स्थानीय हरिहर साव बालिका उच्च विद्यालय बाढ़, पटना के प्रांगण में त्रिदिवसीय कार्यक्रम 6, 7, 8 मार्च, 2013 को धूमधाम से मनाया गया।

जिसमें भजनोपदेशक श्री देवेन्द्र प्रसाद सत्यार्थी एवं पंडित विनोद कुमार शास्त्री आये हुए थे जिन्होंने भजन से जनता को मुग्ध कर दिया।

आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान महात्मा आनन्द स्वामी एवं आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री जी ने अपनी वाणी से जनता को झकझोर दिया। समाज में फैली कुरीतियों पर व्यापक प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि वेद सभी लोगों को पढ़ने का अधिकार है एवं गो-हत्या के रोक लगाने पर भी मार्ग दर्शन दिये।

प्रधान श्री नवीन कुमार मंत्री राममूर्ति पंडित संयुक्त मंत्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्री चन्द्रिका प्रसाद, श्री रघुनन्दन प्रसाद ने आर्य महोत्सव को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किये। अन्त में प्रधान श्री नवीन कुमार ने शांति पाठ कर सभा का समापन किया।

मंत्री आर्य समाज मंदिर, बाढ़, पटना

आर्य समाज, खलासी लाईन में होलिकोत्सव पर विशेष यज्ञ

आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में नवश्रेष्टि पर्व पर आर्य समाज में यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान राजकुमार आर्य सपत्नी रहे। यज्ञ के उपरान्त वैदिक विद्वान श्री सोमदत्त शर्मा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि हमें आत्मिक उन्नति अपना लक्ष्य रखना चाहिए न कि आर्थिक उन्नति। आत्मिक उन्नति से हम सब प्रकार की सुख समृद्धि शांति से युक्त व कलहों से मुक्त हो जायेंगे। तत्पश्चात् आर्य समाज खलासी लाईन के वरिष्ठ पुरोहित श्री बारूराम शर्मा जी ने होलिकोत्सव की व्यापक व विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। होलिकोत्सव का भी कृषि से ही सम्बन्ध है। जब फसलें पक जाती हैं उन्हें काटने में हम सब प्रकार का भाईचारा बनायें रखें एवं गले मिलकर इस कार्य को करें जिससे किसी प्रकार का भी विवाद न हो और प्राप्त अन्न के उपरान्त हम यज्ञ के रूप में होलो (अन्न के दानों) की आहूति यज्ञ में देते हैं जिससे वातावरण भी शुद्ध होता है और आपसी भाईचारा भी बना रहा है। परन्तु वर्तमान में इसका विकृत रूप कर दिया है जिसमें यज्ञ का स्वरूप बिगाड़ दिया है और होलिका दहन आदि नाम रख दिया है। नवश्रेष्टि पर्व हमें भाईचारे, आस्तिक भाव आदि का संदेश देता है। इसी को लक्ष्य रखकर हमें इस परम्परा को मनाना चाहिए। तभी होलिकोत्सव का सदुपयोग होगा। अन्यथा दुरुपयोग ही होगा। तत्पश्चात् शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस दौरान योगराज शर्मा, रोशन लाल, बारूराम शर्मा, रविकांत राणा, सुरेन्द्र चौहान, बिजेन्द्र आर्य, प्रतिभा त्यागी, दिव्या आर्य, प्रकाश चन्द्र वशिष्ठ, राजकुमार, अनिता आर्य, रमेश राजा, ओम प्रकाश आर्य, सुरेश सेठी आदि ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

मंत्री–सुरेश कुमार सेठी

नव सम्वत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (दिनांक 11 अप्रैल, 2013 ई.) से प्रारम्भ

1. **सृष्टि सम्वत्** 1960853114वाँ अर्थात् पृथ्वी पर सूर्य का प्रथम प्रकाश पहुँचने का एक अरब सतानवे करोड़ उन्तीस लाख उनन्चास हजार एक सौ चौदहवाँ वर्ष।

2. **विक्रमी सम्वत –** 2070वाँ अर्थात् महाराजा विक्रमादित्य के राज्यारोहण का दो हजार सत्तरवा वर्ष।

3. **आर्य समाज सम्वत** – 139वाँ अर्थात् समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों के उन्मुलन हेतु सच्चे वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाने हेतु स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज का एक सौ उन्तालिसवा वर्ष।

भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु नव सम्वत् के इस शुभ अवसर पर परस्पर एक दूसरे को बधाई दें। इस बार मेरी उपस्थिति में इस उपलक्ष्य में निम्न भव्य आयोजन हो रहे हैं :–

(1) दिनांक 5 अप्रैल, 2013 को रामलीला मैदान, दिल्ली में योग शिविर, रक्तदान शिविर, बृहद यज्ञ व सांस्कृतिक सम्मेलन। (2) दिनांक 7 अप्रैल, 2013 को आर्य समाज गंज, गाजियाबाद में बहुकुण्डीय यज्ञ व संस्कृति रक्षा सम्मेलन। (3) दिनांक 11 अप्रैल, 2013 को जीमखाना मैदान मेरठ में 511 कुण्डीय जनचेतना महायज्ञ।

कृपया आप परिवार व इष्ट मित्रों सहित पधार कर कृतार्थ करें।

पं. माया प्रकाश त्यागी, अध्यक्ष, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, सदस्य, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति

सामवेद पारायण यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में तीन दिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन 24, 25 व 26 मार्च, 2013 को ग्राम खेड़ी पट्टी जिला शामली (उ. प्र.) में सफलता पूर्वक किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ 24 मार्च, 2013 को प्रातः किया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण शुक्रताल से पधारे स्वामी महानन्द जी ने किया।

तीन दिन चले इस महायज्ञ के ब्रह्मा और सार्वदेशिक सभा संचालन समिति नई दिल्ली के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की समस्त प्रक्रियाओं को सम्पन्न करवाया। अपने उद्बोधन में कहा कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यज्ञ अपने आपमें एक बहुत बड़ी व्यवस्था है। अग्नि और सूर्य का यज्ञ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अग्नि के बिना यज्ञ होता नहीं और सूर्य किरणें ही अग्नि के द्वारा यज्ञ में हुत पदार्थो को प्राप्त कर आकाश में सुरक्षित करती और रासायनिक परविर्तन से विविध कार्यो का सम्पादन करती है। अग्नि तत्व वाहक है। इससे बढ़कर यज्ञ का और कोई उत्तम माध्यम नहीं है। यह हवि को जलाकर उसके सूक्ष्म तत्वांश को सभी देवों तक पहुँचा देता है जिससे हमें देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। स्वामी जी ने कहा कि जो यज्ञ करता है वह हिंसा से रहित होता है और ऊर्जा का धारक तथा परमप्रभु की भद्र शक्ति से युक्त होकर संसार के ज्ञानान्धकार को दूर करने की शक्ति भी प्राप्त करता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ अवश्य करना चाहिए।

तीन दिन तक चले इस सामवेद पारायण महायज्ञ का समापन 26 मार्च होली के अवसर पर हुआ। इस अवसर पर गाजियाबाद संन्यास आश्रम के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, ब्र. ऋषि आर्य, ब्र. रामफल आर्य, बिजेन्द्र ठेकेदार खरड़, यशपाल अंगिरा आदि ने भी अपने विचार रखे।

इस पूरे कार्यक्रम का संचालन ब्र. सहसरपाल आर्य व ब्र. श्रीपाल आर्य ने किया। वेद पाठ ब्र. रमाकान्त व ब्र. ऋषि आर्य ने किया। इस यज्ञ में आस–पास के विभिन्न गांवों के लोगों ने आहूति डाली। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों द्वारा स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी महानन्द जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी व वेद पाठियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम बेहद सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। पूरे इलाके में इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का संकल्प लिया। ब्र. सहसरपाल आर्य ने सभी अतिथियों तथा विद्वानों एवं ग्रामीणों का धन्यवाद किया।

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य रामनाथ वेदालंकार का निधन

आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के उद्भट्ट विद्वान् एवं वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, लेखक, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व आचार्य एवं महान मनीषी आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी का हरिद्वार में आकस्मिक निधन हो गया है। उनके निधन से समूचे आर्य जगत को गहरा आघात पहुँचा है क्योंकि उनके जैसे विद्वान आज की पीढ़ी में तैयार नहीं हो पा रहे हैं, उनके निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें तथा उनके सगे–सम्बन्धियों एवं पारिवारिक जनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पृष्ठ 1 का शेष

त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन.....

किया। इन सत्रों का संचालन रवीन्द्र कुमार ने किया। रात्रि सत्र 7.00 से 9. 00 बजे तक चला, जिसमें स्वामी विवेकानन्द जी (मेरठ) स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी प्रणवानन्द जी का ओजस्वी उपदेश हुआ।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में संस्कृत का गुणगान करते हुए सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने कहा संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। सभी त्रुटियों से रहित होने के कारण इसे संस्कृत कहते हैं। देवो की भाषा होने के कारण यह देववाणी कहलाती है। अध्यात्म और विज्ञान उभयज्ञान का आकार चारो वेद देववाणी नामक ग्रन्थ शल्य चिकित्सा का वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। स्वामी जी ने कहा कि जिस भाषा के पास अध्यात्म, विज्ञान, कला, संस्कृत आदि विभिन्न विषयों पर इतने विशाल भण्डार हों ऐसी संस्कृत भाषा का वर्तमान परिवेश में दशा अत्यन्त चिन्तनीय है। संस्कृत एक जीवन्त भाषा है और सबसे बढ़कर वेदवाणी है इसको जन–जन तक पहुँचाना अत्यन्त आवश्यक है। मैं आयोजकों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इतने महत्त्वपूर्ण विषय को छुआ और विद्वत्त मण्डल में चेतना जगाने का प्रयास किया।

समापन सत्र यज्ञोपरान्त 24 मार्च रविवार को प्रारम्भ हुआ। इस सत्र की

विश्वशान्ति एवं मानव कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण यज्ञ

जयपुर : वैदिक विधि विधान एवं कर्मकाण्ड के प्रति आकर्षण व श्रद्धा अब पौराणिक जगत एवं सामाजिक संगठनों को भी आकृष्ट करने लगे हैं। इसका ताजा उदाहरण मानसरोवर कालोनी के 'डे केयर सेन्टर' में वरिष्ठ जनों की संस्था सीनियर सीटिजन फोरम द्वारा आहूत यजुर्वेद पारायण यज्ञ है। आर्य समाज जयपुर दक्षिण के संयोजन में दिनांक 7 मार्च, 2013 से 10 मार्च, 2013 तक विश्व कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञ 7 मार्च, 2013 को ऋषि दयानन्द के 189वें जन्मोत्सव के साथ प्रारम्भ हुआ और पूर्णाहुति ऋषि बोध दिवस 10 मार्च, 2013 को सम्पन्न हुई। प्रख्यात वेद मनीषि डॉ. रामपाल विद्याभास्कर इस यज्ञ के ब्रह्मा बने और डॉ. सुमित्रा (वाराणसेय स्नातिका) ने वेदपाठ किया। कार्यक्रम के संयोजक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने ऋषि के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला। स्वर माधुर्य चारों दिन सर्वश्री यादराम, जवाहर लाल वधवा मेहरा परिवार, श्रीमती सुधा मित्तल तथा सुनील अरोड़ा ने भजनों द्वारा प्रस्तुत किया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजस्थान के स्थाई कार्यक्रम 'जातिवाद के विरूद्ध जंग' के अन्तर्गत 10 मार्च, 2013 को पूर्णाहुति के पश्चात् अन्तरजातीय विवाहित आठ जोड़ों का प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह और माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया गया।

नगर के वैदिक विद्वान डॉ. के. सी. सिंह एवं विशिष्ट जनों का सम्मान सीनियर सिटीजन फोरम के अध्यक्ष के. एम. रामनानी एवं आर्य समाज जयपुर दक्षिण के प्रधान डी. के. गुप्ता द्वारा किया गया।

आयोजन में स्थानीय लोगों की रुचि व बहुलता बनी रही नगर के सभी आर्य समाजों का प्रतिनिधित्व रहा। शांति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर के साथ समागम विसर्जित हुआ।

– ईश्वर दयाल माथुर

संस्कृत में ही है। अध्यात्म विवेचन के लिए जहाँ उपनिषदें संस्कृत में हैं वहीं पूर्णतः तर्क पर आधारित षड्दर्शन भी संस्कृत में ही हैं। बाल्मीकिय रामायण और महाभारत विश्व श्रेष्ठ इतिहास के साथ–साथ दैनिक जीवन के सूक्ष्म और श्रेष्ठ व्यवहारों का वर्णन करने वाले श्रेष्ठ कार्य संस्कृत में हैं। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में संस्कृत में रचित शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और पाणिनी के अष्टाध्यायी की विश्व में कोई समता नहीं है। गीता, स्मृति आदि संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि हैं। चरक संहिता जहाँ रोग के विभिन्न लक्षण, कारण, निदान और औषधि का अमूल्य कोष है, वहीं सुश्रुत अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आनन्द कुमार (आई. पी. एस.) व डी. आई. जी. मुम्बई उपस्थित थे। इस सत्र में वैदिक मिशन मुम्बई के उद्देश्यों का वर्णन किया गया। कार्यक्रम का संचालन वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी ने किया। इस प्रकार यह कार्यक्रम 1 बजे समाप्त हुआ। दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से सभी आगन्तुक विद्वानों को शॉल, बैग व प्रमाण पत्र वितरित किये गये। इस प्रकार अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन का सफलता पूर्वक समापन हुआ। डॉ. धमेन्द्र कुमार (सचिव) ने सभी विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। **वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है।** जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

'शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द' ग्रन्थ का लोकार्पण

प्रख्यात साहित्यकार एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के सद्यः प्रकाशित ग्रन्थ 'शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द' का लोकार्पण मूर्धन्य संन्यासी स्वामी (डॉ.) आर्येश आनन्द सरस्वती (मनन–आश्रम, पिण्डवाड़ा, राज.) ने किया। उन्होंने कहा कि

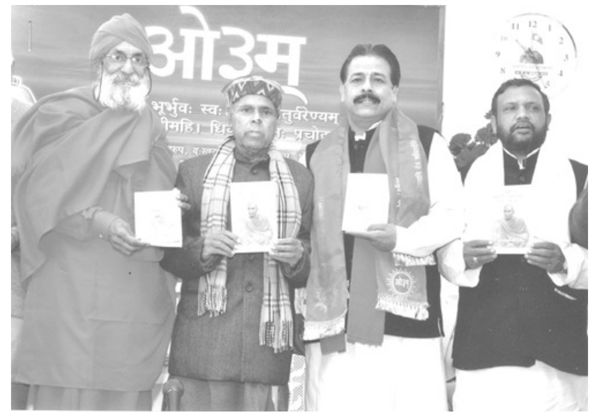

महर्षि दयानन्द के बाद आर्य जगत् में जिस महापुरुष को सर्वाधिक श्रद्धा के साथ याद किया जाता है वे हैं अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर वैदिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अन्यतम योगदान दिया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इस ग्रंथ के प्रकाशक डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि इस ग्रंथ में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की सभी प्रमुख घटनाएँ तो हैं ही, यह युवकों का पथ–प्रदर्शक और प्रेरक भी हैं, अतः सभी आर्यजनों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। इस ग्रन्थ का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार कर हमें पुण्य का भागी बनना चाहिए।

प्रख्यात वैदिक विद्वान एवं 'अध्यात्म–पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि यह ग्रन्थ प्रेरक, उद्‌बोधक, पठनीय और मननीय है। आर्य समाज, बी–ब्लाक, जनकपुरी के युवा धर्माचार्य आचार्य योगेन्द्र शास्त्री ने कहा कि सरल, सुबोध एवं रोचक शैली में लिखित इस ग्रंथ में स्वामी जी के विषय में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का निराकरण करते हुए डॉ. कथूरिया ने उनकी शून्य से शिखर तक की यशोगाथा को बीच–बीच में काव्यात्मक उद्धरणों से चित्रित किया है। ग्रंथ का लोकार्पण आर्य समाज, बी–ब्लाक, जनकपुरी के चार दिवसीय वेद प्रचार समारोह के समापन के अवसर पर विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री के. एल. गुप्ता ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री रामनाथ जी सहगल (मंत्री, टंकारा ट्रस्ट एवं उपप्रधान, डी. ए. वी. प्रबंधकर्तृ समिति) एवं ऋषि चन्द्र मोहन खन्ना (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द धर्मार्थ पुस्तकालय एवं शोधकेन्द्र) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री डालेश त्यागी एवं श्री वेद प्रकाश की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। अन्त में डॉ. कथूरिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

— चन्द्रशेखर शास्त्री, सम्पादक

NDPSo on 12/13 अप्रैल-2013
प्रकाशन की तिथि : 11 अप्रैल, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

परमात्मा का दर्शन क्यों नही होता?

न तं विदाथ य इमा जजान अन्यद् युष्माकं अन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावता जल्प्या चासुतप उक्थशासश्चरन्ति।।

—ऋ० १०/८२/७; यजु:० १७/३१

ऋषिः—**विश्वकर्मा भौवनः।।** देवता—**विश्वकर्मा।।** छन्दः—**पादनिचत्त्रिष्टुप्।।**

विनय—हे मनुष्यो ! तुम उसे नहीं जानते जिसने कि ये सब भुवन बनाये हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है। तुम्हारा वह पिता है, परन्तु तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गये हो, तुम्हारा उससे बहुत अन्तर पड़ गया है। ओह! कितना भारी अन्तर हो गया है। मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए। वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा की भी आत्मा है। उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हमसे और कोई है ही नहीं, हो ही नहीं सकती। सचमुच वे परम—आत्मा हमारी आत्मा में भी व्यापक हैं। उनसे निकट हमारे और कोई नहीं है। फिर वे हमसे दूर क्यों हैं? इसका कारण यह है कि हमारे और उनके बीच में प्रकति का पर्दा आ गया है। हम दो प्रकार के पर्दों से ढके हुए हैं, जिससे कि वह इतना निकटस्थ भी हमसे इतना दूर हो गया है। एक प्रकार के (तमोगुण—बहुल) लोग तो 'नीहार'=अज्ञान से ढके हुए हैं जिसकी धुन्ध में इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते; दूसरे (रजोगुण—बहुल) लोगों ने 'जल्पि' से, विद्या के शब्दाडम्बर से, पढ़ी—लिखी मूर्खता से निरर्थक जल्पना के पर्दे से अपने—आपको ढक लिया है। ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी—अपनी दिशा में इतनी दूर बढ़ते गये हैं कि प्रभु से दिनों—दिन दूर होते गये हैं। नीहारावत लोग तो संसार में ''असुतप्'' होकर विचर रहे हैं। वे खाते—पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं। कामनाओं—इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है। ये ज्यों—ज्यों अपनी बढ़ती जाती हुई अनगिनत कामनाओं को तप्त कर अपनी इन कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों—त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं। इसी तरह दूसरे जल्पावत लोग ''उक्थशास्'' होते हैं, अर्थात् संसार में बड़े—बड़े शास्त्र पढ़कर, वादविवाद—वितण्डा में चतुर होकर, दूसरों को जोरदार व्याख्यान देते फिरते हैं, परन्तु अपने—आपको नहीं पहचानते। ये जितने भारी वक्ता, लेखक और शास्त्रार्थकर्त्ता होते जाते हैं उतने ही ये वाह्य शब्दजाल में ऐसे उलझते जाते हैं कि अन्दर के देखने के अयोग्य होते जाते हैं, अतः अन्दर के आत्मस्थ प्रभु से दूर होते जाते हैं।

इसलिए आओ, हम लौटें अपने अन्दर की ओर लौटें और अपने उस आत्मा के आत्मा को पा लेवें जिसके साथ हमें निरन्तर जुड़ा रहना चाहिए।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! **तं न विदाथ**=तुम उसे नहीं जानते **य इमा जजान**=जिसने कि इन सब (भुवनों) को बनाया है। **अन्यत्**=तुम अन्य प्रकार के हो गये हो और **युष्माकं अन्तरं बभूव**=तुम्हारा उससे बहुत अन्तर हो गया है। **नीहारेण**=अज्ञान के कोहरे से **प्रावताः** =ढके हुए और **जल्प्या च**=अनत और निरर्थक शब्दजाल से ढके हुए हम मनुष्य **असुतपः** =प्राणतप्ति में लगे हुए होकर या **उक्थशासः**=आडम्बरवाले बहुभाषी होकर **चरन्ति**=भटकते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में:—

अवितरण की दशा में लौटाएँ—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान/आसफ अली रोड़, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर–घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायेरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक,
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक
दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार
डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी – 249404 जिला – हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन – 01334-246073

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा सक्सेना आर्ट प्रिंटर्स : सैड-26 ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से प्रकाशित एवं मुद्रित।
(फोन : **011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216**) **सम्पा. : प्रो० कैलाशनाथ सिंह (सभा मन्त्री) मो.:0.9415017934**
◆ **ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in** ◆ **वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com**

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।